विश्व न्याय मन्दिर

9 सितम्बर 2007

उन बहाई छात्रों के प्रति जिन्हें ईरान में

उच्च शिक्षा से वंचित किया गया है

प्रिय बहाई मित्रों,

यातनाओं से भरे इस कठिन समय में, हम भावनात्मक रूप से आपके साथ हैं और हमारे हृदय उन अत्याचारों से बोझिल हैं जो अभी भी आप पर ढाए जा रहे हैं। ईरान के अधिकारियों द्वारा बहाई छात्रों को उच्चतर शिक्षा हासिल करने पर लगातार प्रतिबंध लगाए रखने का रवैया अत्यंत दुःखद है। हाल ही में विज्ञान, शोध एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के केन्द्रीय सुरक्षा कार्यालय द्वारा ईरान के इक्यासी विश्वविद्यालयों के अधिकारियों को भेजे गए एक गोपनीय संदेश का खुलासा होने से इस नीति की स्पष्ट रूप से पुष्टि हो गई है जिसमें ऐसे किसी भी छात्र को निष्कासित किए जाने के लिए कहा गया है जिसके बारे में यह पता चले कि वह बहाई है। हाल के दिनों में शिक्षा मूल्याँकन संगठन द्वारा उठाए गए कदम से इसकी पुनः पुष्टि होती है जिसने आगामी शैक्षणिक सत्र (2007-2008) में विश्वविद्यालय में दाखिला की परीक्षा देने वाले करीब 800 बहाईयों के आवेदन-पत्रों को “अपूर्ण” -- और इसलिए अमान्य -- घोषित किया है। ये विभागीय कार्यवाहियाँ शर्मनाक एवं निराशाजनक हैं।

कुछ ही महीने पहले, ईरान में बहाई छात्रों के निष्कासन के बारे में समाचार-पत्रों में छपी रिपोर्टों का संयुक्त राष्ट्रसंघ में ईरानी मिशन के एक प्रवक्ता द्वारा खण्डन किया गया जिसने सीधे तौर पर यह कहा कि ईरान में किसी को भी धर्म के आधार पर विश्वविद्यालय से निष्कासित नहीं किया गया है। बहाई छात्रों के प्रति सरकार के व्यवहार के बारे में ब्रिटेन के एक संसद सदस्य की चिन्ताओं का लिखित उत्तर देते हुए ऐसा ही आश्वासन युनाइटेड किंगडम में ईरान गणतंत्र के दूतावास द्वारा भी दिया गया था। बहाईयों की पहचान करने और पूरे देश में गुप्त रूप से उनके गतिविधियों पर नज़र रखने सम्बन्धी एक आलेख छपने के बाद उसके प्रत्युत्तर में, इथोपिया के एक अखबार में उस देश में ईरान के दूतावास की ओर से भी इसी तरह का एक बयान प्रकाशित हुआ था।

दो दशकों से भी अधिक समय से ईरान के बहाई छात्र विश्वविद्यालय में प्रवेश करने में सक्षम नहीं थे क्योंकि उनके सामने एकमात्र रास्ता यही था कि वे अपने धर्म के बारे में असत्य

बोलें। उसके बाद, एक संकेन्द्रित विश्वव्यापी प्रयास के बाद -- जिसमें सरकारें, शैक्षणिक संस्थाएँ, गैर-सरकारी संगठन, और अनेक व्यक्ति भी शामिल थे -- इस स्थिति के बारे में कुछ सवाल खड़े किए गए और तब आपकी सरकार के प्रतिनिधियों ने यह बयान दिया कि फॉर्मों में धर्म के बारे में की गई पूछताछ धर्म के आधार पर विश्वविद्यालयीन छात्रों की पहचान के लिए नहीं था बल्कि सिर्फ यह जानने के लिए कि वे किस धर्म के बारे में परीक्षा देना चाहते हैं।

यह समझा जा सकता है कि ऐसे जवाब आपको बहुत हद तक संदेहास्पद ही लगे होंगे। तथापि, सद्भावना की दृष्टि से और एक ऐसे मुद्दे का निराकरण करने के लिए जो ईरान की ख्याति पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है, बहाई समुदाय ने इस स्पष्टीकरण को स्वीकार कर लिया। अन्ततः, आपके मन में यह आशा जगी कि अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए अब आपका मार्ग प्रशस्त होगा। इसलिए, आपमें से कुछ लोग 2006-2007 की प्रावेशिक परीक्षा में बैठे और विश्वविद्यालय में अपना रजिस्ट्रेशन करा सके। लेकिन आपकी आशाएँ क्षणिक साबित हुईं क्योंकि इस शैक्षणिक सत्र में जो छात्र नामांकित हुए थे उनमें से आधे से ज्यादा को निष्कासित कर दिया गया। और अब हमारे पास मंत्रालय का पत्र है जिसमें इस बात की पुष्टि की गई है कि और किसी कारण से नहीं बल्कि सिर्फ इस कारण से कि आप बहाई धर्म से जुड़े हुए हैं आपको अपने देश के उच्च शिक्षा संस्थानों में अपनी शिक्षा जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हाल की घटनाओं से प्रभुधर्म के इतिहास के हृदय-विदारक वृतान्तों, आपके पूर्वजों के विरुद्ध रचे गए क्रूर छल-प्रपंचों का स्मरण हो आता है। उचित यही है कि आप उसी रचनात्मक लोचपूर्णता के साथ अपने विरोध का प्रतिकार करें जो अपने शत्रुओं के छल के प्रतिरोध में उनकी विशेषता बनकर उभरी थी। उन पर जिन कठिनाइयों का आघात किया गया था उसके प्रत्युत्तर में उन शूर-वीरों ने नए धर्म की शिक्षाओं को आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास के कार्यों में चरितार्थ करने का प्रयास किया था। यह आपका कार्य भी है। उनका उद्देश्य था समाज के ताने-बाने को रचना, उसे मजबूत बनाना, उसे परिष्कृत करना, और इसलिए उन्होंने स्कूलों की स्थापना की जिनमें लड़कों और लड़कियों को समान रूप से शिक्षा दी गई, उन्होंने प्रगतिशील सिद्धान्तों का प्रणयन किया, विज्ञानों का विकास किया, कृषि, स्वास्थ्य और उद्योग जैसे विविध क्षेत्रों में अपना योगदान दिया और इन सबसे राष्ट्र को लाभ मिला। आप भी अपनी मातृभूमि की सेवा करने और सभ्यता के नवनिर्माण में योगदान देने का प्रयत्न करें। उन्होंने अपने शत्रुओं की अमानवीयता का उत्तर धैर्य, शांति, त्याग और संतोष से दिया, धोखे के आचरण के बदले सत्यनिष्ठा और निर्दयता के बदले सबके प्रति सद्भाव का चुनाव किया। आप भी ऐसे महान गुणों की झलक दिखाएँ और इन्हीं सिद्धान्तों के प्रति समर्पित होते हुए आप उस कलंक को झूठा साबित कर दें जो आपके धर्म पर लगाया गया है और इस तरह निष्पक्ष लोगों की सराहना अर्जित करें।

सरकार द्वारा बहाईयों या अन्य युवाओं को उच्चतर शिक्षा से वंचित किए जाने का यह कार्य ईरान की विगत उपलब्धियों से बिल्कुल विपरीत है। यह बात दुनिया के लोगों, ख़ासतौर पर युवाओं, को कैसे समझाया जाए जबकि ऐसे कृत्य एक ऐसे राष्ट्र में किए जा रहे हों जो इस्लाम के सिद्धान्तों से अपने जुड़ाव का दावा करता है? फिर शिक्षा के उस मूल्य के बारे में क्या कहा जाए जिनका पिछली शताब्दियों में समर्थन किया गया और जिससे प्रेरणा पाकर ज्ञान के सुविख्यात केन्द्रों की स्थापना की गई थी और आपके राष्ट्र में ऐसे मेधावी लोग पैदा हुए जिन्होंने ज्ञान का विकास करते हुए कला और विज्ञान के क्षेत्र में अपने चिरस्थायी योगदान दिए? उस देश के लिए क्या परिणाम उपस्थित हो सकते हैं जब विदेशों के विचारवान लोगों और प्रतिष्ठित संस्थाओं को यह बात आश्चर्यजनक रूप से अविश्वसनीय लगती हो कि वह 'मंत्रालय' जिसका दायित्व ज्ञान का विकास करना है ऐसे दिशानिर्देश जारी करे जिनमें अपने ही देश के लोगों को शिक्षा की सुलभता से इन्कार किया जाता हो? जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा ऐसे निर्णयों के नैतिक आधारों के बारे में क्या कहा जा सकता है? क्या तर्कसंगत रूप से यह मान लिया जाना चाहिए कि उनके मन में ईरान द्वारा न्याय और निष्पक्षता के लिए की गई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के लिए जरा भी सम्मान नहीं है या, वाकई, क्या उन्हें ईश्वर से भय का जरा भी भान नहीं है?

आप जो कष्ट झेल रहे हैं, अथक रूप से आप जो त्याग कर रहे हैं, परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी दुःखपूर्ण हों, वे केवल उस आतंक का एक हिस्सा हैं जो कि वैश्विक खलबली की इस घड़ी में ईरान और विश्व भर के लाखों-लाख लोगों को उत्पीड़ित कर रहा है। यह स्वीकृति आपकी विपत्ति की घनघोरता को जरा भी कम नहीं करती बल्कि यह आवश्यक है कि आप इसके प्रसंग को समझें। विश्व की दयनीय दशा पर बहाउल्लाह ने अक्सर यह बात कही थी कि "अफसोस कि निराशा की हवाएँ हर दिशा से प्रवाहित हो रही हैं, और मानवजाति को विभाजित एवं व्यथित करने वाली कलह दिनोंदिन बढ़ती जा रही है।" उन्होंने लिखा कि "दुनिया घनघोर उथल-पुथल की स्थिति में है और इसके लोगों के मनो-मस्तिष्क अत्यंत उलझन में पड़े हैं।"

अपने कष्टों के प्रत्युत्तर में, कुछ लोग अपने अत्याचारियों के खिलाफ उठ खड़ा होना चाहते हैं, कुछ लोग केवल शरण की चाहत में भाग जा सकते हैं और कुछ अपने आपको अपनी किस्मत के हवाले छोड़ देते हैं। लेकिन जहाँ दुनिया के अधिकांश उत्पीड़ित लोग अक्सर अत्याचार की आकस्मिक ताकतों, पूर्वाग्रह, या अन्याय के शिकार हुआ करते हैं, वहीं आप यह भी जानते हैं कि आपको कष्ट क्यों भोगने पड़ रहे हैं, और इसलिए आपका प्रत्युत्तर भी उसी अनुरूप स्पष्ट होना चाहिए। बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा की कुछ शिक्षाओं पर विचार करें : "स्वयं को अपनी ही

चिन्ताओं में निमग्न मत करो। तुम्हारे विचार उस पर केन्द्रित हों जो मानवजाति की नियति को पुनःस्थापित करेगा और जो लोगों के हृदयों और आत्माओं को पावन बनाएगा।" "तुम घृणा और तिरस्कार, अनादर, शत्रुता और अन्याय पर ध्यान मत दो: तुम इन सबसे उल्टा आचरण करो।" "यदि अन्य लोग... तुम्हारे जीवन में विष घोलें तो तुम उनकी आत्माओं में मधुरता का संचार करो।"... "यदि तुममें से कोई किसी शहर में प्रवेश करे तो अपनी ईमानदारी और निष्ठा, सत्यवादिता और दुनिया के सभी लोगों के प्रति अपनी स्निग्ध दयालुता के कारण वह आकर्षण का केन्द्र बन जाए।" "तुम लोग अत्याचार के शिकार सभी व्यक्तियों के सहायक और वंचितों के संरक्षक बनो।" "जो कोई भी उसके रास्ते से गुजरे उस हर व्यक्ति का वह कुछ भला करे।" "...सम्पूर्ण निष्ठा और शुद्ध इरादे से, और केवल ईश्वर के निमित्त, जनमानस को सही परामर्श एवं शिक्षा देने का काम हाथ में लो और ज्ञान रूपी अंजन से उनकी दृष्टि को स्पष्ट बनाओ।"

क्या स्वयं बहाउल्लाह ने अपनी शिक्षाओं की घोषणा के लिए कठिनाइयाँ नहीं झेलीं? "मानवजाति अपने बन्धन से मुक्त हो सके" क्या इसलिए उन्होंने "जंजीरों में बंधना स्वीकार" नहीं किया?

प्रकाशित अन्तःकरण के साथ, पूरे विश्व को समेटने वाली संकल्पना लेकर, बिना किसी समूहगत राजनीतिक मंसूबे के, और कानून एवं व्यवस्था के प्रति आदर की भावना के साथ, अपने राष्ट्र के नवनिर्माण के प्रयास में जुट जाएं। अपने कर्मों और अपनी सेवाओं के माध्यम से अपने आस-पास के लोगों के हृदयों को आकर्षित करें, यहाँ तक कि अपने घोर शत्रुओं से भी सम्मान पाने की कोशिश करें, ताकि प्रभुधर्म की उस जन्मभूमि में आप अपने समुदाय की निर्दोषता साबित कर सकें और उसके प्रति निरन्तर बढ़ती हुई प्रतिष्ठा एवं स्वीकृति हासिल कर सकें। इन्हें आपके निराश हृदयों को तसल्ली देने वाले महज शब्द न मानें, बल्कि उस स्थिति के बारे में विचार करें जो कि 1979 से ही ईरान के बहाईयों द्वारा झेली जा रही यातनाओं के प्रति अनुशासित प्रतिक्रिया के कारण सामने आई है। क्या जिस तरह से उन्होंने अब तक अपने प्रति किए गए अत्याचारों का प्रतिकार किया है उससे उन्हें सतत् बढ़ती हुई संख्या में अपने देशवासियों की दिली सराहना हासिल नहीं हुई है? निस्संदेह, अपनी रक्षा करना वाजिब बात है और अत्याचार से आपकी रक्षा के लिए हर सिद्धान्त-सम्मत उपाय किया जा रहा है। क्या आपकी ओर से सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों और सभी जगहों के प्रतिष्ठा-प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर सक्रिय प्रतिरक्षा अभियान नहीं चलाया गया है? स्पष्ट है कि आप अकेले

नहीं हैं। लेकिन यह भी जरूरी है कि आपके सतत् प्रयास के साथ धैर्य भी होना चाहिए और, वास्तव में, सामाजिक विकास की सामान्यतः मंद गति से चलने वाली प्रक्रियाओं में जिस धैर्य की जरुरत होती है वह बड़ी तकलीफदेह होती है।

नव-प्रकटित सत्य के प्रति विरोध का होना मानव इतिहास की एक सामान्य बात है और यह बात हर युग में अपने आपको दुहराती है। लेकिन इसी के समानांतर यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जिस विचार का समय आ चुका है उसे कोई हरा नहीं सकता। विश्वास की स्वतंत्रता का, विज्ञान और धर्म, आस्था और तर्क के बीच तालमेल का, महिलाओं के उत्थान का, हर तरह के पूर्वाग्रहों से मुक्त होने का, विविध लोगों और राष्ट्रों के बीच आपसी सम्मान ही नहीं बल्कि समस्त मानवजाति की एकता का, दौर आ चुका है। ईरान के लोगों की गहनतम उत्कण्ठा में बहाउल्लाह द्वारा प्रणीत विश्व को आंदोलित करके रख देने वाले सिद्धान्तों के अभिप्रायों की गूंज सुनाई पड़ रही है।

दूसरों की सेवा ही मार्ग है। यही आपका सूत्रवाक्य होना चाहिए और अब्दुल-बहा आपके उदाहरण। उनकी तरह, आप भी अपने नागरिक बंधुओं की सेवा के व्यावहारिक रास्ते तलाश सकते हैं। सबके सामान्य हित को बढ़ावा देने के लिए, सबसे हाथ मिलाकर, सबके कंधे से कंधा मिलाकर, काम करने का प्रयत्न करें।

सचमुच यह प्रकाशित आत्माओं की बहादुरी का वक्त है। परम प्रिय मित्रो, हमारी प्रार्थना है कि आपकी गिनती ऐसे ही महान लोगों में हो।

-विश्व न्याय मन्दिर